# धर्मायण

(धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की पत्रिका)

अंक : 87
जुलाई-सितम्बर, 2013
श्रावण-आश्विन, २०७०

कृष्णजन्म (१७०३ ई.)

A Collection of Voyages and Travels नामक पुस्तक में Philip Baldaeus के अध्याय 'The idolatry of the East India Pagons' में प्रकाशित

महावीर मन्दिर प्रकाशन

मूल्य - पन्द्रह रुपये

# ऋग्वेद में श्राद्धकर्म की श्रेष्ठता

भवनाथ झा

सनातन धर्म में मरणोपरान्त दाह संस्कार किया जाता है। इस संस्कार का संकेत हमें ऋग्वेद में भी मिलता है। यज्ञ में अग्नि की प्रार्थना करते समय कहा गया है कि हे अग्निदेव, मांसभक्षण करनेवाले, शरीर को लेकर यमलोक तक पहुँचानेवाले अर्थात् शव को जलानेवाले आप यमलोक चले जायें। यहाँ यज्ञ में आप अपने दूसरे रूप में पधारकर देवताओं के लिए हविष्य ले जायें। इस मन्त्र में अग्निदेव के दो रूप मिलते हैं-(1) मरणोपरान्त शरीर को यमलोक तक पहुँचानेवाले क्रव्याद अग्नि तथा (2) देवताओं को हविष्य पहुँचानेवाले यज्ञाग्नि। यह मन्त्र इस प्रकार है-

**क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं**
**यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः।**
**इहैवायमितरो जातवेदाः**
**देवेभ्यो हव्यं वहतु सुप्रजानन्।।**

(10.16.9)

इस मन्त्र से स्पष्ट संकेत है कि मृत्यु के उपरान्त अग्नि-संस्कार का विधान भारत में ऋग्वेद काल से ही है।

इस दाह संस्कार से पहले अभ्युक्षण अर्थात् स्नान कराने का भी विधान है, जो वर्तमान में सभी प्रचलित पद्धतियों में उपलब्ध है। इस स्नान का भी संकेत हमें ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के 14वें सूक्त यम-सूक्त में मिलता है। वहाँ कहा गया है कि श्मशान में चार आँखों वाले दो कुत्ते हैं, जो शव को दूषित करने के लिए तत्पर हैं, किन्तु वे शव का स्पर्श तक नहीं कर पाते, क्योंकि शव का अभ्युक्षण (मन्त्रों से अभिषेक एवं स्नान) करा दिया गया है।

यह भी अवधारणा है कि श्मशान की वह भूमि यमराज ने मृतक को दी है, जहाँ उसका दाह-संस्कार होना है। वहाँ से सभी पिशाचों को दूर हट जाने के लिए कहा जाता है:- शव दाह्यभूमि (श्मशान) पर वास करनेवाले भूत-पिशाचो! इस मृत यजमान की दहन भूमि को छोड़कर दूर हटो। यह भूमि इस मृतक यजमान का स्थान है। यह स्थान दिन के द्वारा, रात्रि के द्वारा, और अभ्युक्षण जल के द्वारा अत्यन्त शुद्ध है। मृतकों के देवता यम ने यह स्थान इस मृतक को दिया है।।9।।

यहाँ पर श्मशान की अग्नि से प्रार्थना की गयी है कि आप इस मृतक को वहाँ ले जायें, जहाँ इनके पूर्वज गये हैं और यमलोक में यमराज के साथ प्रसन्नतापूर्वक रह रहे हैं।

मरणोपरान्त किये जानेवाले श्राद्धकर्म के सम्बन्ध में यद्यपि परवर्ती कुछ पन्थों के द्वारा प्रश्नचिह्न लगाये गये हैं, जैसा कि आर्यसमाजियों ने लगाया है, किन्तु यदि हम वैदिक साहित्य का पुनरवलोकन करें तो पाते हैं कि ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में श्राद्ध का उल्लेख हुआ है, तथा मरणोपरान्त अपने माता-पिता के श्राद्धकर्म की श्रेष्ठता बतलायी गयी है। वैदिक साहित्य में श्राद्ध की चर्चा होने से इसकी प्राचीनता स्वयंसिद्ध है।

पुनर्जन्म सम्पूर्ण भारत की सनातन मान्यता है। वैदिक, बौद्ध, जैन- इन तीनों सम्प्रदायों में पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता की मान्यता है कि जिस प्रकार हम पुराने वस्त्रों को उतार कर नवीन वस्त्र धारण करते हैं, उसी प्रकार आत्मा भी पुराने या कटे-फटे शरीर को छोड़कर नवीन शरीर में प्रवेश करती है। यही मृत्यु और पुनर्जन्म है। यह आत्मा कभी मरती नहीं, न जन्म लेती है; यह अजर है, अमर है।

वैदिक मान्यता है कि मरणोपरान्त हमारे पूर्वज यमलोक जाते हैं, वहाँ यम की प्रसन्नता के कारण उनकी कृपा से वे अच्छे स्थान पाते हैं, जहाँ वे अपने पूर्वजों के साथ रहते हुए विभिन्न प्रकार के सुख भोगते हैं। अतः मृत्यु के देव यम को प्रसन्न करने के लिए उनकी स्तुति करना, उन्हें हविष्य प्रदान करना प्रत्येक मृतक की सन्तान का कर्तव्य है, ताकि माता-पिता मरणोपरान्त यमराज की कृपा प्राप्त कर सकें और अपने पूर्वजों के लोक में जाकर उनसे मिल सकें, साथ ही उन्हें प्रेतलोक में भटकना न पड़े।

ऋग्वेद के दशम मण्डल के 14वें सूक्त यम-सूक्त में मृत प्राणी के आत्मज पुत्र को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि तुम्हारे पितरों के स्वामी यम हैं, जो श्राद्ध में दिये गये अन्न को ग्रहण करते हैं, तुम इससे उन्हें तृप्त करो। यम विधिपूर्वक किये गये श्राद्ध से प्रसन्न होते हैं, और मृत प्राणी को अभीष्ट देश (स्वर्ग) जाने के सारे मार्ग प्रशस्त करते हैं। मरणोपरान्त जीव को यही सद्गति प्रदान करने के अधिकारी हैं।

इसी सूक्त में आगे संकेत है कि मृतप्राणी स्वर्ग में देवराज इन्द्र की प्रजा बन जाते हैं। इन पितरों में जो महत्त्वपूर्ण कव्य, अंगिर, ऋक्व आदि पितर हैं वे क्रमशः इन्द्र, यम एवं बृहस्पति की भी सहायता करते हैं। ये सभी पितर वर्धमान है, हमेशा वृद्धि करते हैं। उनके इस स्वर्ग के जीवन के लिए श्राद्ध कर यम देव को प्रसन्न करना आवश्यक है।

इसी सूक्त में यम से प्रार्थना की गयी है कि आप श्राद्ध-कर्म में पधारकर कुश के आसन पर बैठकर यजमान (कर्ता) को अभीष्ट फल दें। कर्ता यजमान के रूप में यह कामना करता है कि हमारे पुराने पूर्वज अर्थात् पितामह, पितामही, प्रपितामह प्रपितामही आदि ऊपर की पीढ़ी के थे, जो पहले ही मरणोपरान्त जिस मार्ग से गये हैं, उसी मार्ग हमारे ये नवीन पूर्वज माता-पिता जायें और इस श्राद्ध में अन्न से तृप्त यमदेवता एवं राजा वरुण का दर्शन करें।

इसी यम-सूक्त में कर्ता अपने मृत माता-पिता से प्रार्थना करते हैं कि हे मृतक! आपके पितर स्वर्ग में पूर्व से विराजमान हैं, जाकर उनसे मिलें। आप ने जो इष्टापूर्त (श्रौत-स्मार्त निरूपित दान) की है, उस फल से भी आप मिलें। इस इष्टापूर्त के फल से आप पाप रहित (अनवद्य) होकर व्रियमान नामक ग्रह में स्थान प्राप्त करें और अपने शोभन दीप्त शरीर का भी साक्षात्कार करें।

इस मन्त्र में यह भी संकेत किया गया है कि स्वर्गलोक में प्रत्येक प्राणी अपने प्रकाशमान शरीर को धारण करते हैं तथा अपने पूर्वजों के बीच सम्मिलित होकर सुख भोगते हैं। यही संकल्पना वर्तमान श्राद्ध-पद्धति में सपिण्डीकरण (पितर-मिलौनी) का नियमन करता है।

इसी प्रकार, ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 15वें सूक्त पितृसूक्त में कर्ता अपने पितर से प्रार्थना करता है कि उन सभी पितरों को मेरा नमस्कार प्राप्त हो जो पितर पहले मरे हैं, यथा- पितामह, ज्येष्ठ भ्रातादि एवं जो पितर पीछे मरे हैं यथा- कनिष्ठ भ्रातादि। जो पितर नव जन्म ग्रहण कर बन्धु रूप में पृथ्वी पर आ चुके है अथवा जो पितर अभी द्यु-लोक में श्रेष्ठों के बीच हैं, उन सब पितरों को मेरा आज नमस्कार।

इस प्रकार ऋग्वेद के तीन सूक्तों में मृत्यु के उपरान्त सन्तान द्वारा किये जानेवाले श्राद्ध-कर्म की मूल भावना निहित है। साथ ही हम देखते हैं कि यहाँ सामान्य मनुष्य की चर्चा की गयी है, जाति का कहीं भी उल्लेख नहीं है। व्यवहार में भी प्रत्येक जाति के प्रत्येक गृहस्थ के लिए श्राद्ध का विधान है। हलाँकि, मध्यकाल में श्राद्ध के स्वरूप का किञ्चत् विस्तार हो गया है, जिन्हें सम्पादित करने की आवश्यकता है। मूलश्राद्ध की जड़ें ऋग्वेद काल से है। इन तीनों सूक्तों के अधिकांश मन्त्र वर्तमान श्राद्ध-पद्धति में उपलब्ध हैं। इन्हें पढ़ने का बाद पितरों के प्रति हमारी श्रद्धा बलवती होती है, इसलिए सभी पाठकों के लिए भारतीय ज्ञान की यह धरोहर हिन्दी अनुवाद के साथ यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। इसका अनुवाद **पं. सुरेशचन्द्र मिश्र** द्वारा किया गया है:-

## ऋग्वेद- मण्डल १०, सूक्त १४

**परेयिवांसं प्रवतो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।**
**वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा दुवस्य ।।१।।**

मृत प्राणी के अन्तःकरण स्वरूप, हे यजमान, तुम्हारे पितरों के स्वामी यम हैं, जो पुरोडाश (श्राद्ध में दिये गये पाकान्न) को ग्रहण करते हैं, तुम इससे उन्हें तृप्त करो। यम विधिपूर्वक किये गये श्राद्ध से प्रसन्न होते हैं और मृत प्राणी को सुखद देश (स्वर्ग) जाने के सारे मार्ग प्रशस्त करते हैं। मरणोपरान्त जीव को यही सद्गति प्रदान करने के अधिकारी हैं।।1।।

**यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ ।**
**यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः।।२।।**

इनका मार्ग सदा अबाध है, इन्हें कोई रोक नहीं सकता। जिस मार्ग से हमारे पितर गये हैं, सारे मृतक जीव पूर्वापर आगे पीछे रूप से अपने कृत कर्म के अनुसार इसी मार्ग से जाते हैं।

**मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः।**
**यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवान्त्स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति।।३।।**

मातली सारथी वाले इन्द्र कव्यभोगी पितरों की सहायता से, यम अङ्गिर नामक पितरों की सहायता से, बृहस्पति ऋक्व नामक पितरों की सहायता से बढ़ते हैं। इस तरह जो देवताओं की सहायता से बढ़ते हैं और जो देवताओं की सहायता करते हें, वे सभी वर्धमान है। समासतः स्वाहा ग्रहण करनेवाले और स्वाहा से प्रसन्न होने वाले सभी वर्धमान है।

**इमं यम प्रस्तरमा हि सीदाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः।**
**आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व।।४।।**

यम, अङ्गिरा नामक ऋषियों के साथ एकमत होकर इस विराट् यज्ञ में सम्मिलित हों। ऋत्विकों के द्वारा प्रयुक्त मन्त्र तुम्हारा आह्वान करते हैं। हे राजन, इस हविष् से तृप्त होकर आप यजमान को अभीष्ट फल दें।।4।।

**अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिर्यम वैरूपैरिह मादयस्व।**
**विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्य।।५।।**

हे यमराज, आप वैरूप (अनेक रूप वाले) अङ्गिरा के साथ इस श्राद्ध में पधारें एवं यजमान को अभीष्ट फल दें। आप सूर्य पुत्र हैं, मैं इस यज्ञ में उनका भी आवाहन करता हूँ। वे भी कुशासन पर बैठकर कर्त्तारूप यजमान को हर्षित करें।

**अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।**
**तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।।६।।**

मेरे पितर, जो अङ्गिरा, अथर्वा और भृगु नाम वाले हैं उन्होंने अभी-अभी पधार कर, हमारे ऊपर अपनी प्रीति दिखाई है। हम सभी यज्ञ को सफल बनानेवाले उन पितरों की कृपा-दृष्टि का लाभ लें। हमें उनका अनुग्रह प्राप्त हो, और हम सभी सन्मार्ग पर चलें।

**प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः।**
**उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्॥७॥**

हमारे पुरातन पितर पितामहादि जिस मार्ग से गये हैं, तत्काल मृत प्राणी भी उसी रास्ते से जाएँ, एवं वहाँ जाकर स्वधा (पितरों के भोज्य पदार्थ, पिण्डादि) से तृप्त यम एवं प्रकाशमान् वरुण देने को देखें।।7।।

**सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन्।**
**हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः॥८॥**

हे मृतक! आपके पितर स्वर्ग में पूर्व से विराजमान हैं, जाकर उनसे मिलें। आप ने जो इष्टापूर्त (श्रौत-स्मार्त निरूपित दान) किया है, उस फल से भी आप मिलें। इस इष्टापूर्त के फल से आप पाप रहित (अनवद्य) होकर ब्रियमान नामक ग्रह में स्थान प्राप्त करें और अपने शोभन दीप्त शरीर का भी साक्षात्कार करें।

**अपेत वीत वि च सर्पतातोऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन्।**
**अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै॥९॥**

ऐ शव दाह्यभूमि (श्मशान) पर वास करनेवाले भूत-पिशाचो! इस मृत यजमान की दहन भूमि को छोड़कर दूर हटो। यह भूमि इस मृतक यजमान की है। यह स्थान दिन के द्वारा, रात्रि के द्वारा और अभ्युक्षण जल के द्वारा अत्यन्त शुद्ध है। मृतकों के देवता यम ने यह स्थान इस मृतक को दिया है।।9।।

**अतिद्रव सारमेयौ श्वानौ चतुरक्षौ शबलौ साधुना पथा।**
**अथा पितॄन् सुविदत्राँ उपेहि यमेन ये सधमादं मदन्ति॥१०॥**

हे अग्नि! चार आँख वाले और चितकबरे ये दो भयानक सारमेय- कुत्ते हैं, मृतक को शीघ्र इनसे दूर ले जाओ। इस मृतक को सुगम मार्ग से वहाँ ले जाओ जहाँ इनके पितर यम के साथ मुदित भाव से रहते हैं।।10।।

**यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ।**
**ताभ्यामेनं परिदेहि राजन्त्स्वस्ति चास्मा अनमीवं च धेहि॥११॥**

हे राजन्, हे यम, ये चार नेत्र वाले दोनों कुत्ते आपके घर के रक्षक हैं, और आपके मार्ग के भी रक्षक हैं। ये मृत लोक वासी मनुष्यों से बहुविध प्रशंसित हैं। इनसे इस मृतक की रक्षा करें, इन्हें व्याधिरहित करें एवं सुन्दर फल के भागी बनावें।।11।।

**उरूणसावसुतृपा उदुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतौ जनाँ अनु ।**
**तावस्मभ्यं दृशये सूर्याय पुनर्दातामसुमद्येह भद्रम्॥१२॥**

लम्बी नाकों वाले, दूसरे के प्राण भक्षण कर तृप्त होनेवाले, मनुष्यों को लक्ष्य कर विचरण करनेवाले, एवं अपरिमित बल वाले, जो दो यमदूत हैं, वे आज यहाँ कमें, सूर्य के दर्शन के लिए यथेष्ट ऊर्जा दें।

**यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः।**
**यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः॥१३॥**

हे ऋत्विक्, तुम मृत्युदेवता यम को सोम एवं हवि का हवन करो। इसके दूत अग्नि हैं जिन्हें विधि भोगों से संतुष्ट किया गया है, क्योंकि ये ही इस श्राद्ध के द्वारा हमें यश की ओर ले जाते हैं।।13।।

**यमाय घृतवद्धविर्जुहोत प्र च तिष्ठत ।**
**स नो देवेष्वा यमद्दीर्घमायुः प्र जीवसे ॥१४॥**

हे ऋत्विक्, पिण्डदाता, तुम यम के लिए घृत युक्त पुरोडाशादि हवि से हवन कर इन्हें प्रसन्न करो। हे देवों के बीच श्रेष्ठ यम, आप हमें दीर्घायु प्रदान करें।।14।।

**यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।**
**इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः ।।१५।।**

हे पिण्डदाता ऋत्त्विक्, यम मिष्ट हवि ग्रहण करते हैं, इन्हें मिष्ट हवि दें। ये ऋत्विक् हवि के द्वारा सुगम मार्ग बनाते हैं अतः पहले इन्हें नमस्कार है।।15।।

**त्रिकद्रुकेभिः पतति शलुर्वीरेकमिद्बृहत् ।**
**त्रिष्टुब्गायत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आहिता ।।१६।।**

त्रिकद्रुक यज्ञ (ज्योति, गौ आयु) के अधिकारी यम देवता हैं। ये यम द्युलोक, भूलोक, जल, उद्भिज, उर्क, सुनृत नामक छः स्थानों में रहते हैं। वेदों में प्रयुक्त गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप् आदि छन्दों में यम की बार-बार स्तुति है क्योंकि यम ही इस विस्तृत संसार में सदा विचरणशील हैं। ऋत्विक् सदा इनकी ही स्तुति किया करते हैं।।16।।

## ऋग्वेद- मण्डल १०, सूक्त १५

**उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।**
**असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।१।।**

हमारे पितरों की तीन श्रेणियाँ हैं- उत्तम, मध्यम और अधम। ये पितर मेरे द्वारा दत्त होमीय द्रव्यों को कृपापूर्वक स्वीकार करें। मैं उनके प्रति अत्यन्त कृतकृत्य हूँ, जो पितर मेरे इस यज्ञीय कर्म- धर्मानुष्ठान में अहिंसक भाव रखकर कृपा-पूर्ण दृष्टि से मेरी रक्षा करने को उपस्थित हैं। इस यज्ञानुष्ठान पर्यन्त वे मेरी रक्षा करें।

**इदं पितृभ्यो नमो अस्त्व ये पूर्वासो य उपरास ईयुः।**
**ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता यो वा नूनं सृवृजनासु विक्षु।।२।।**

उन सभी पितरों को मेरा नमस्कार प्राप्त हो जो पितर पहले मरे हैं, यथा-पितामह, ज्येष्ठ भ्रातादि एवं जो पितर पीछे मरे हैं यथा- कनिष्ठ भ्रातादि। जो पितर नव जन्म ग्रहण कर बन्धु रूप में पृथ्वी पर आ चुके है अथवा जो पितर अभी द्यु-लोक में श्रेष्ठों के बीच हैं, उन सब पितरों को मेरा आज प्रणाम।।2।।

**आहं पितॄन्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः।**
**बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः।।३।।**

मेरे पितर मेरी भक्ति को भलीभाँति जानते हैं, इसी कारण मैंने उनकी कृपा भी मुझे प्राप्त है, मुझे विधिपूर्वक यज्ञानुष्ठान करने का निदेश भी उन्हीं से प्राप्त है। मेरे आदर पूर्वक दिये गये स्वधा पुरोडाश एवं सोमरस को पवित्र आसन पर बैठकर ग्रहण करनेवाले पितर आज मेरे बीच हैं।

**बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।**
**त आ गतावसा शंतमेनाथा नः शंयोररपो दधात।।४।।**

यागादि शुभ कर्म कर जो मेरे पितर पितृलोक को प्राप्त हुए हैं, वे यहाँ आकर आसन ग्रहण कर मेरी रक्षा करें। उनके लिए ही यह हव्य है, इसका भोग करें। आएँ मेरी मङ्गल कामना करें, मुझे सुख दें एवं मुझे पाप रहित करें।।4।।

**उपहूता पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।**
**त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।५।।**

मेरे कृपा परायण, सोमपायी पितर, हवि रूप स्वाद भोगों का भक्षण करने वाले मेरे पितर जिन्हें मैंने बुलाया है इस श्राद्ध में आयें और आकर मेरे द्वारा प्रदत्त द्रव्यों को खाये एवं मेरी स्तुति स्वीकार करें।।5।।

**आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभिगृणीत विश्वे।**
**मा हिंसिष्ट पितरः केनचिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम।।६।।**

श्राद्धकर्त्ता यजमान विश्वास पूर्वक अपने पितरों से कहता है, हे पितर, आप लोग आयें, जानु (घुटना) टेक कर मेरे दक्षिण बैठें कुशलतापूर्वक मेरे द्वारा किये इस यज्ञ की सपफलता की कामना करें। मैं तुच्छ मनुष्य हूँ, अपराध होना स्वाभाविक है। अतः हे पितर, आप मेरे अपराधें के लिए मेरी हिंसा नहीं करें।

**आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय।**
**पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्ज दधात।।७।।**

लपलपाती ज्वाला के पास बैठनेवाले ये यजमान हैं, हे पितर इन्हें धन दें। हे पितर, इनके पुत्रों को धन दें। इन्हें यज्ञानुष्ठान श्राद्ध हेतु ऊर्जावान् बनावें, इन्हें तेज से भर दें।।7।।

**ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः।**
**तेभिर्यमः संरराणो हवींष्य् उशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु।।८।।**

शुद्ध वस्त्र धारण कर सोमपायी मेरे पूर्व पितरों ने विधि पूर्वक सोमपान किया था। अब वे तथा यम भी हवि की कामना करते हैं। मेरे उन पितरों के साथ यम भी प्रसन्न हो कर हव्य ग्रहण करें।।8।।

**ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदः स्तोमतष्टासो अर्कैः।**
**आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् सत्यैः कव्यैः पितृभिर्घर्मसद्भिः।।९।।**

हे अग्नि, भलीभाँति यज्ञ करने वाले अपने स्तोत्रों से सूर्य की आराधना करनेवाले मेरे सभी पितर क्रमशः देवत्व को प्राप्त कर चुके हैं, यदि उन्हें अब भी भूख-प्यास सताती है तो आज (अग्नि) उन्हें मेरे निकट लाएँ। वे मेरे परिचित हैं और यज्ञानुष्ठान में भाग लेने वाले हैं। इस यज्ञ के सारे होमीय द्रव्य उन्हीं के लिए है।।9।।

**ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः।**
**आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः परैः पूर्वैः पितृभिर्घर्मसद्भिः।।१०।।**

हे अग्नि एकत्र हो भक्षण योग्य इवि को खाने वाले, पान योग्य हवि को पीनेवाले, इन्द्र के साथ रथ पर शोभायान सरल चित मेरे पितर हैं। देव पूजन, यज्ञानुष्ठान कर्त्ता ऐसे मेरे प्राचीन और नवीन पितरों के साथ आप मेरे पास आएँ।

**अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः।**
**अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्य् अथा रयिं सर्ववीरं दधातन।।११।।**

हे अग्निष्वात्ता (अग्निना आस्वादिता) नामक मेरे पितर आप सब इस पितृकर्म में आएँ। यहाँ आकर क्रमशः आसन ग्रहण करें एवं कुशासन पर दिये गये पवित्र हवि भक्षण करें। पश्चात् पुत्र-पौत्र सहित धनादि मुझे प्रदान करें।।11।।

**त्वमग्न ईळितो जातवेदोऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वी।**
**प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि।।१२।।**

हे जातवेद (जातं सर्वं जगत् वेत्ति इति) नामक अग्नि मैंने आपकी स्तुति की है। आपने मेरे द्वारा दिये गये हविष् को सुगन्धित कर पितरों को दे दिया है। मेरे पितर 'स्वधा' के साथ इस हवि को खाएँ। हे अग्नि देव (जातवेद) आप भी इस हवि को खाकर तृप्त हों।।12।।

**चे चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म।**
**त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व ॥१३॥**

जो मेरे पितर यहाँ उपस्थित है और जो नहीं भी है उपस्थित हैं वे सभी यहाँ आएँ। हे अग्नि, आप मेरे सभी पितरों को जानते हैं, जिन्हें मैं भी नहीं जानता। हे पितर, आप इस स्वधारूप अन्न (जो सुपक्व एवं स्वादिष्ट है) का इस यज्ञ में भक्षण करें।।13।।

**ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।**
**तेभिः स्वराळसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयस्व॥१४॥**

जो मेरे पितर श्मशान में भस्म हो चुके हैं और जो श्मशान कर्म को प्राप्त नहीं हुए हैं (अर्थात् नहीं जलाए गये हैं) वे सभी द्युलोक में स्वर्ग में स्वधा रूप हविष्यान्न भक्षण करते हुए आनन्दित हैं। हे तेजस्वी अग्नि, आप मेरे पितरों के प्राणपोषक शरीर को देव शरीर बनाने की कृपा करें, क्योंकि यही उनकी अभिलाषा है।।14।।

## ऋग्वेद- मण्डल १०, सूक्त १३५

**यस्मिन्वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबते यमः।**
**अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ अनु वेनति॥१॥**

यम देवता ताप जनित थकान को दूर करने के लिए जिस सुन्दर पत्र-पुष्प वाले पलाश वृक्ष पर बैठकर देवों के साथ खाते-पीते हैं, मेरे नर श्रेष्ठ (महान्) पिता भी उसी वृक्ष पर बैठकर अपने पूर्व पुरुषों (पुरुखों) का साथी बनना चाहते हैं।।1।।

**पुराणाँ अनुवेनन्तं चरन्तं पापयामुया।**
**असूयन्नभ्यचाकशं तस्मा अस्पृहयं पुनः॥२॥**

''मैं अपने पुराण पुरुषों का साथी बनू'' यह मेरे पिता की अभिलाषा थी। पर मैने उनकी उस उत्तम अभिलाषा को दोष-दृष्टि से देखा, यह मेरा पाप था। अब मैं इस दूषण बुद्धि का परित्याग कर उनके प्रति अनुरक्त हूँ।।2।।

**यं कुमार नवं रथम् अचक्रंमनसाकृणोः।**
**एकेषं विश्वतः पाञ्चम् अपश्यन्नधि तिष्ठसि॥३॥**

(नचिकेता को यम अपने इस कथन से प्रलोभित करता है) हे नचिकेत! आप ने चक्र रहित और एकेषयानी जिसमें एक ही दण्ड हो एवं जो चारो ओर जानेवाला हो, ऐसे रथ की चाह की थी, इस समय उसी रथ पर चढ़े हैं। (यम की दृष्टि में शरीर ही बह रहा है)

**यं कुमार प्रावर्तयो रथं विप्रेभ्यस्परि।**
**तं समानु प्रावर्तत समितो नाव्याहितम्॥४॥**

हे कुमार नचिकेत, आपने पृथ्वी पर वर्तमान अपने मेधावी भाई बन्धुओं की उपेक्षा कर यह रथ चलाया है। यह रथ आपके पिता के सदुपदेश के उपरान्त ही चला है। यह उपदेश आपके लिए नौका भूत आश्रय है। नौका पर सवार होकर ही यह रथ इस लोक से चला है।।4।।

**कः कुमारमजनयद् रथं को निरवर्तयत्।**
**कः स्वित्तदद्य नो ब्रूयाद् अनुदेयी यथाभवत् ।।५।।**

किस पुरुष ने इस कुमार को जन्म दिया, किसने इस रथ को भेजा है अथवा जिस प्रकार से यह बालक यम द्वारा भू-लोक पर आया है, इन बातों को आज मुझे कौन कहेगा?।।5।।

**यथाभवदनुदेयी ततो अग्रमजायत।**
**पुरस्ताबुद्ध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम्।।६।।**

जिस पिता के द्वारा यह बालक यम के अनुग्रह से भू-लोक में आयेगा, यह पहले से ही ज्ञात है। यहाँ पहले पिता निर्दिष्ट मूल उपाय यानी यह घर तक कैसे जाए, यह बताया गया है। बाद वहाँ से कैसे लौटा जाए, इसकी युक्ति (उपाय) कही गई है।।6।।

**इदं यमस्य सादनं देवमानं यदुच्यते।**
**इयमस्य धम्यते नालीर अयं गीर्भिः परिष्कृतः।।७।।**

यह यम के नियन्ता आदित्य का अथवा वैवस्वत का यह सदन है। ऐसा कहा जाता है कि यह सदन देवनिर्मित है। यहाँ यम की प्रसन्नता के लिए वेणु (वाँसुरी) बजाया जाता है। तीन स्तुतियों से यहाँ यम को प्रसन्न किया गया है।।7।।

---

# लेखकों से निवेदन

2015 ई. से धर्मायण को अपने नये रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रस्ताव है। अगले अंक से शोधपरक आलेख के साथ पाठकों द्वारा मिले सुझावों के अनुरूप कुछ स्थायी-स्तम्भ भी प्रकाशित किये जायेंगे। इन स्थायी-स्तम्भों का स्वरूप इस प्रकार है:

1. **नमसा विधेम**- संस्कृत के श्लोकों में देवस्तुति, हिन्दी अनुवाद सहित, अप्रकाशित 2. **देवस्तुति**- हिन्दी में छन्दोबद्ध प्राचीन अथवा आधुनिक भक्तिपरक कविताएँ। 3. **शोधपरक आलेख** 4. **प्रेरक-पुरुष**। सन्तों, महापुरुषों की जीवनी। 5. **प्रेरक-प्रसंग** 6. **अलौकिक अनुभूति** 7. **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्**। आयुर्वेद से घरेलू नुस्खे 8. **ज्योतिष-चर्चा** 9. **आस्था के केन्द्र** 10. **संस्कृत भाषा-परिचय** 11. **धार्मिक शंका-समाधान** 12. **धार्मिक पुस्तक समीक्षा** 13. **धरोहर** 14. **पाठकीय प्रतिक्रिया** 15. **तीर्थयात्रा-वृत्तान्त।**

अतः सुधी लेखकों से निवेदन है कि उक्त स्तम्भों के लिए अपने मौलिक तथा अप्रकाशित अप्रसारित आलेख हमें प्रेषित करें। रचनाओं की एक प्रति अपने पास अवश्य रख लें। आपकी रचनाओं में राजनीति की कोई बात नहीं होनी चाहिए। सामाजिक सद्भाव, धार्मिक उदारता, भारतीय गरिमामयी संस्कृति आदि की झलक हमारी पत्रिका की पहचान है। टंकित या हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार्य हैं। टंकित आलेख mahavirmandir@gmail.com पर भेज सकते हैं। लेखक अपना फोटो एवं साहित्यिक परिचय अवश्य भेजें। यदि आलेख में कोई फोटो डाला गया हो तो उसका .jpg फाइल ईमेल से अवश्य भेजें। रचनाओं के लिए मन्दिर की ओर से सम्मानकी की व्यवस्था है। अपना पत्राचार पता अवश्य लिखें।

इनके अतिरिक्त 'धर्मायण' के पाठक नियमित रूप से **महावीर मन्दिर समाचार परिक्रमा** से भी अवगत होते रहेंगे।

# महावीर मन्दिर प्रकाशन की पुस्तकें

मूल्य ३०.०० रु.

मूल्य ८५.०० रु.

मूल्य ६०.०० रु.

मूल्य २५.०० रु.

मूल्य २५.०० रु.

मूल्य २५.०० रु.

मूल्य २०.०० रु., १००.०० रु.

मूल्य ५.०० रु.

मूल्य ५.०० रु.

मूल्य २०.०० रु.

मूल्य १५.०० रु.

मूल्य ६०.०० रु., १२५.०० रु.

मूल्य १०.०० रु.

मूल्य ५०.०० रु.

मूल्य १०.०० रु.

अप्राप्य

अप्राप्य

अप्राप्य

अप्राप्य

मूल्य ६०.०० रु.

सद्भावना प्रति

अप्राप्य

अप्राप्य

अप्राप्य

अप्राप्य

मुद्रण : प्रकाश ऑफसेट, नयाटोला, पटना